बी०एड्-II-C-8

Date: 11/05/2020

प्रकृतिवाद का दार्शनिक दृष्टिकोण —

तत्व दर्शन में प्रकृतिवाद —

प्रकृतिवादी परमाणु को सत, अनश्वर एवं अविनाशवान मानते है। प्रकृतिवादियों के अनुसार मनुष्य इन्द्रियों एवं विभिन्न शक्तियों का समन्वित रूप है। यह सब प्रकृति का अंश है। सम्पूर्ण सृष्टि में नियम विद्यमान है। सब कार्य नियमानुसार होते है। इस लिए मनुष्य भी नियमाअधीन है। और उसमें स्वतंत्र इच्छा जैसी कोई शक्ति नही है। ये नियम प्रकृति के स्वयं के नियम है। इसमें परिवर्तन किसी प्रयोजन से नही होते है। वरन कार्य - कारण सम्बन्ध के आधार पर अपने आप स्वयं हो जाते है।

ज्ञान शास्त्र में प्रकृतिवाद —

प्रकृतिवादी ज्ञान का समर्थन करते है। वे इन्द्रियों तथा अनुभव के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति पर बल देते है। वे इन्द्रियों द्वारा प्राप्त किये जाने वाले ज्ञान को सत्य मानते है। हर्बर्ट स्पेन्सर इस ज्ञान को निम्न स्तर के ज्ञान से ऊँचा और तत्व ज्ञान से निम्न मानता है। तत्व ज्ञान पूर्ण रूपेण संगठित ज्ञान होता है। इसको स्पेन्सर ने सर्वोत्तम प्रकार का ज्ञान बताया है। रूसो ने शिक्षा के सबस्तरो पर प्रत्यक्ष ज्ञान को महत्व दिया है।

Scanned with CamScanner